Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/20084
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/20084

RESEARCH ARTICLE

COMET LEADERS FIGHTING FOR A VALUE

"एकटा मूल्य लेल लड़ैत धूमकेतुक अगुरवान"

Arun Kumar Thakur[1] and Surander Bhardag[2]

1. Maithili Department of Explorers University (LNMIVV, Darbhanga).
2. Assistant Professor Maithili-Department, Chandradhari Mithila College, Darbhanga (L.N.M.V.V., Darbhanga).

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 17 October 2024
Final Accepted: 19 November 2024
Published: December 2024

Abstract

Gandhian in his ideals and principles, Marxist in his thoughts, Bholanath Jha alias Dhumketu, who is a supporter of the real world, is a social person in all his stories, all the neglected class-exploited victims, women, labourers, inhuman beggars, with his full desire, Aspiration is struggling with the poison of life, 'Agurvaan' is a monster of Maithili social madness falling in the brahminical mud. 'Agurvaan' is committing matricide in order to protect this value. 'Comet-Aguruvan is a satire with a sharp edge, sharp is the society on earth which is called unguruvan, in reality it is not the society itself that is unguruvan.

आदर्श में गाँधीवादी आ सिद्धान्न ओ विचारमे मार्क्सवादी, भोलानाथ झा उर्फ धूमकेतु जे भोगल यथार्थक पक्षधर रहलाह, हुनकर कथा सभमे समाजक सभ सँ उपेक्षित वर्ग-शोषित पीड़ित स्त्रीगण, मजूर, नेना सँ से अमानुष भिखारिधरि अपन सम्पूर्ण इच्छा, आकांक्षा आ जिजीविषाक संग संघर्ष करैत भटैत अछि, 'अगुरवान' ब्राह्मणवादक गछाड़ मे पड़ल मैथिली समाजक पाग कैँ कारी क दैत अछि। 'अगुरवान' एहि मूल्यक रक्षार्थ मे मातृहन्ता कहबैछ। 'धूमकेतुकअगुरवान व्यंग्यक तीक्ष्ण धार सँ युक्त अछि, तीक्ष्ण एतेक धरि जे समाज जकरा अगुरवान कहैत अछि, वस्तुत: अगुरवान ओ नहि समाज स्वयं अछि।

Copyright, IJAR, 2024,. All rights reserved.

प्रस्तावना:–

कथा लिखवाक कलामे धूमकेतु सिद्धस्त छलाह। आधुनिक मैथिली गद्य कैँ सधनव्यवस्थित आ निस्सम रूप देवा मे धूमकेतुक येागदान अनुयतम छनि। "फुसियाहा आदर्श आ नैतिकताक आभरण मे अपन याथार्थ नुकौने पारम्परिक मैथिली समाजक ढोंग कैँ सभ तरि उजागर करब धूकेतु जीक विशिष्टता रहलनिअछि।"[1]

बाह्य जीवन मे जे किछु घटित भ रहल अछि- दैनैदिनी अखबारी घटनाखंड, सामाजिक क्रेज आ कि राजनीतिक दाव-पेंच, रहल अछि- दैनैदिनी अखबारी घटनाखंड, सामाजिक क्रेज आ कि राजनीतिक दाव-पेंच, ताहि सभ कैँ हम जीवन नहि मानैत छी। जीवनक निस्तार भीतर छैक, जत निरन्तर गहनतम संघर्ष चलैत रहैत छैक, मनुक्खक यैह संघर्षपूर्ण अन्तस स्वयं सँ लड़वाक सनातन युद्धक्षेत्र हमर सृजन भूमि थिक।

Corresponding Author:- Arun Kumar Thakur
Address:- Maithili Department of Explorers University (LNMIVV, Darbhanga).

अन्हार अन्तस केर दोगदाग, ताहि में फण पटकैत करिक्का नाग, हाहाकार करैत शांति-वन में छाया- प्रेतक चीत्कार यैह हमर रचना संसार थिक।"[2]

'धूमकेतु' कथा अगुरवानककथानायक बंगट मेएहने नाग फुफकार कऽ उठैत अछि, ओ तावत धरि शांत नहिहोइत अछि, जखन धरि ओ सतमाय कैँ दोखरि नहि दैत अछि।

अगुरवान क अर्थ होइछ जाहि मे कोनो प्रकारक गुण नहि हो, अर्थात् सभटा अवगुणे हो से भेल 'अगुरवान' स्वयं कथाकार एकरा मादे जिखने छथि– जे होइ, छौंड़ा, अलवत्त लमोड़ि बहरयलैक। लाज-धाख तैँ साफे घोरिक पीवि गेल रहैक, क्यो कहियो एकटा नीक बोल नहि कहलकैक! अगत्तिए तेहने रहै कोनो दिन एहन नहि बीतै जे हमहूँ ओकरा दस हजार गंजन नहि करिऐ।...जेना पत्थर मे धुर-धुरा बान्हल होइक भरि दिन सगर गाम ढ़हनायल फिरै।"[3]

अगत्ती एतेक जे साँपहु सँ नहि डरै। माट्सैव अहाँ कैँ फूसि कहव? जानयि वैद्यनाय, सुचचा दराध छलैए, सत्तम बात मानू, सामाजिक मूल्यक तैँ रक्षा अनपढ़े गवॉब कए सकैत अछि, जे लक्ष्मी दस-दुआरि थिकी, तै धन पर गुमान नहि करवाक चाही। बरही तिरपितबाक प्रसंग मे वंगट माट्सैव सँ कहैत अछि- जनक गुमान नहि करी, आइ तोरा घर, काल्हि हमरा घर, कहू कि नई माट्सैव! साग कैँ कतवो घी मे तरू तैयो सागक सागे किने? एकरा सभकैँ पढ़ने-लिखने कि अल्हुआ हैत।"[4]

कहबी छैक जे लाचार कैँ विचान नहि होइछ, कल्लर पंडित अन्नक अभाव मे अपाहिज भऽ गेल छयि, धनीभूत पीड़ाक प्रति मूर्त्ति कल्लर मिश्रक आत्माजा सँ अमेर मे छोट, सत्रह ठाम पिऔन लागल साड़ी पहिरने कल्लर मिश्रक पतनी जखन हवेली जाइत छली तँ कल्लर मिश्रक जी पर कहियो काल नीक, निकुत पड़ि जाइत छलै, मुदा छोटका मालिक एक दिन कुिछ कहि देलकनि ताहि दिन सँ हवेली जाएव वन्द कए देली, बड़ इज्जति वाली भेली हे, ई नंगटा छौड़ा जे अछि से गर्जन करैत रहत जे ओम्हर गेलीहय त देख? देव

धूमकेतु, बंगट, कल्लरमिश्रआ पंडिताइन क त्रिकोण मे फैसल छयि, ओ आश्चर्यचकित छथि–"बाट भरि तीनू व्यक्तित्वक चित्र माय मे घुमैत रहल। एक दिस सोलह वर्षक छौड़ा विचित्र दुर्दमनीय आत्मसम्मानक आगि मे दग्ध होइत, दोसर दिस एक मुट्टी अरबा चाउरक भात लेल धर्मपत्तीक देह बेच लेल विकल पंडित आ तेसर दिस मूक रूपे सभ अत्याचार कैँ स्वीकार क लेबा मे जीवनक सार्थकता बुझएवालीसामाजिक नियम सँ गछाड़लि पंडिताइन । अद्भूत त्रिकोण।"[5]

बंगट चोरि क क जीवन गाति क ओहि स्त्रीकैँ जकरा प्रति मातृ भाव तँ ओकरा किन्नहु नहि छैक, अधलाह बाट पकड़वा सँ रोकैत अछि, मुदा वृद्ध क आस्था आस्नेह रखैत, ओकर इच्छा कैँपूर्ति हेतु अधलाह बाट पर अग्रसर होइतअछि। बैगट पन्द्रह दिनक लेल कतहु बाहर जाइत अछि एहि बीच कल्लर पंडित ओकरा जवरदस्ती हवेली मे काम पर भेज दैत अछि– " आहिरे वा, माट्सैव हम एकटा टौक कर आयलछलैह आ अहाँ टोकवो नहि केलो एतेक सुसमालकी मे हम छोरब?– आँखि मे क्रूरताक आभास आबि गेल रहैक, शबदक चिबबैत मुँह बिचकाक कहलक आब हम गोटेक दिन दोखरि देवैक। यैह ने जे फांसी पड़ब। जे हैत से हेतै मुदा ओकरा हम मट्सैब साफ क देवै।

हम पन्द्रह दिन लेल बाहर गेल रही। एही बीच में भेलैए। ई खच्चर बुढ़वा मौगिया कैँ की पट्टटी पढ़ोलकैक से नहि कहि हवेली मे दुनू सांझ भानस कर जाइए मना है घिऐ तँ कान लगैए : मुदा जाएब नहि छौड़ए।

ठीक द्व मासक वादबंगट अपन सतमायक हत्या कर देत अछि बंगट माट्सेव सँ कहैत अछि–नः माट्सैव आइ दोखरि देनिए पंडितवाक बहु कैँ? अलच्छीक उद्धार भ गेलै मट्सैव एकरालेल हम की ने केलों? चोर बनलों, जीवन गातक लेलौं, मुदा ई रंडिया तैयो भसि गेल माट्सेव ओकरा पेट भए गेल छलैए सँ लेने-लेने आइ खुलस हड़ा संखिनी! हम तँ जनिते छलिऐ जे कए दिन ई हेतै, पुछलियै जे आब की करबे? तँ नेप चुआव लागलि, कहलक की? हमरा काटि दे हमरा ओही ठाम ई ठेठी कोदारि फेटल, इाम दीरवारि देलिए, ले आव बुझही दुइय छत देलियैक एकरा गरदनि पर आ एकटा पेट पर।"[6]

कथाक अंत में वंगट माट्सैवसँ कहैत अछि- गरीवक इज्जतिक कोनो मोल नै छै माट्सैव ओकरा इज्जति होइते नहि छैक, ई सब ओकरा मनबेक नहि चाहिऐक। जत पेटक समस्या छै तत इज्जतिक प्रश्न नहि छै।

एहि तरहें ई कथा इज्जतिक अधिकार हेतु साधारण जन जागरुकताक प्रश्न उठबैत अछि धनिक आ गरीब वर्गकबीच इज्जतिक प्रसँग जे एते विडम्वनात्मक अन्तर छैक, तकर विरोध एहि कथा मे व्यक्त होइत अछि। स्वतंत्रराक हेतु कएल गेल संघर्ष मात्र आर्थिक परूजू धरि सीमित नहि भ सकैछ, ओकर व्याप्ति सम्मानक प्राप्ति सेहो छैक, ई इज्जति गरीबक एही सम्मानक माग थिक, ई व्यक्तिगत यथार्य सामाजिक ययार्य बनिजाइत अछि जखन ओ कहैत अछि गरीबक इज्जतिक कोनों मोल नहि छैमाट्सैव- यैहं ओ विन्दु थिक जत व्यक्तिगत समस्या कैँ सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जोइतछैक तैँ एकटा अगुरवान आ ताहू मे मातृहन्ता छौड़ाक प्रति पाठकक मोन मे निकर्षण नहि होइत छैक ओ पाठकक सहृदयता प्राप्त करैत अछि– मात्र एहि लेल जे ओ गुखान भइयो क एकटा मूल्य लेल लड़ैत अछि जान धरि बकसि दै, जन्महोसो देतै तेयौ कहियो ने कहियो जीबैत तँ घूमि ओतै पंडितक वंश बॉचि जयतै।"[7]

समाजक एहि मान्यताकजे अगुरवान लोक पातकी होइन अछि आतैँ ओकरा लग अपन कोनो जीवन दर्शन, कोनो सिद्धान्तक घोर अभाव होइत अछि प्रतिकार में ई कथा लिखल गेल अछि ई क्या देखवैत अछिजे अनुखानक अपन जीवन दर्शन आ सिद्धान्ततँहोइतहि छैक, दुनयिा कैँ नपवाक हेतु ओकरा अपन फीता सेहो होइत छैक ओ जाहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि, कतोर बेर तथाकथित संभ्रांत लोक लेल ओतए पहुँचव कठिन होइत अछि।

निष्कर्षत:–कहल जा सकैत अछि जे धूमकेतु क कथा अगुरवान सदिखन एकटा मूल्यक रक्षार्थ करैत फांसी पर चढ़बाक लेल तैयार रहैत अछि, वर्तमान संदर्भ मे ई कहल सकैत अछि जे हत्या उचित नहि मुदा एहेन क्यो व्यक्ति हेताह जे अपन माय बहिन कैँ काम मे देखि हत्या करवाक योजना नहि बनवैत होइए। हम एहि हत्या कैँ समर्थन नहि करैत अछि, मुदा एतवा तँ जरूर अछि जे गरीबक मे अपन इज्जति प्रति सम्मान होइत छैक

संदर्भ–

1. धूमकेतु– उद्यास्त अनकांत
2. तथैव, पृ० 11
3. तथैव, पृ० 21 अगुरवान
4. तथैव, पृ० 23 अगुरवान
5. तथैव, पृ० 25
6. तथैव, पृ० 26
7. तथैव, पृ० 21